Mob. 9801611703

डा० शैलेश कुमार सिंह
सह प्राध्यापक
भूगोल विभाग
श्री राम सिंह राम कुमार सिंह
महाविद्यालय सहरसा

दिनांक

भूमण्डलीय ताप वृद्धि :
जलवायु परिवर्तन के संकेत

औद्योगिक क्रांति से आरंभ वायुमंडल की क्रमशः तापवृद्धि ऐसे
जो जलवायु परिवर्तन की ओर खतरनाक संकेत दे रहा है।
यह आज विश्व की सबसे ज्वलंत समस्या है। इससे न सिर्फ
मानव बल्कि अन्य प्राणियों एवं जीवों के साथ साथ पादपों
की सामान्य स्थिति में भी आमूल-चूल परिवर्तन की संभावना
है। भूमण्डलीय तापवृद्धि का प्रमुख स्त्रोत वायुमंडल में हा
ग्रह गैस एवं ओजोन अपक्षय गैसों की मात्रा में अप्रत्या
वृद्धि का होना है। इन गैसों में CO_2, मिथेन, नाइट्रस-ऑक्सा
सल्फर डाई-ऑक्साइड, क्लोरोफ्लोरो कार्बन, हैलो जनित गैस
जलवाष्प है। वायुमंडलीय संतुलन को बनाये रखने के लिए
भूमण्डल के 33% भाग पर वनों का होना आवश्यक है
कि हाल के सेटेलाइट सर्वेक्षण के अनुसार पर सिर्फ 10%
पृथ्वी के तापमान में वृद्धि के साथ-

इसके जलवायु में भी परिवर्तन के आसार नजर आने
भीषण बाढ़, वर्षा से तबाही, भीषण गर्मी 'कैटरीना एवं रीट
जैसे तूफान स्पष्ट रूप रूप से जलवायु परिवर्तन की
संकेत कर रहे हैं। सन 2003 तक पृथ्वी का तापमान 5

Scanned with CamScanner

[illegible]

पृथ्वी के तापमान में अनवरत वृद्धि के फलस्वरूप हिमानी 10 से से 15 मी० पिछे की ओर खिसक रहे हैं। निरंतर रूप से बर्फ पिघलने से नदियों में ब की विभिषका दिखाई पड़ेगी। बड़े पैमाने पर फसलों वनस्पतियों के साथ प्राणियों एवं उनके अधिवासों को क्षति होगी।

उद्धृत तथ्यों की गम्भीरता को समझने एवं बचाने के लिए वैज्ञानिकों, तकनीशियनों एवं समाजश को नव-नियतिवाद के सिद्धान्त को आधार बना प्राकृतिक संसाधनों का आदर्श उपयोग करना हो आज आदर्श उपयोग हेतु SCOPE, MAB, WCR WMO एवं ICSU जैसी कितनी ही संस्थायें नयी खोजों एवं संभावनाओं को तलाशने की धु में सतत् कार्यरत हैं।

Scanned with CamScanner